# कक्षा – आठवीं

# हिन्दी

# समास ( व्याकरण )

समास का तात्पर्य है ‘**संक्षिप्तीकरण**’। दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे – ‘रसोई के लिए घर’ इसे हम ‘रसोईघर’ भी कह सकते हैं।

## समास विग्रह -

सामासिक शब्दों के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है।

जैसे-राजपुत्र-राजा का पुत्र।

# समास के भेद

1 अव्ययीभाव

2 तत्पुरुष

3 द्विगु

4 द्वन्द्व

5 बहुव्रीहि

6 कर्मधारय

# अव्ययीभाव समास

जिस समास का पहला पद(पूर्व पद) प्रधान हो और वह अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे – यथामति (मति के अनुसार), आमरण (मृत्यु कर)

यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार

यथाक्रम = क्रम के अनुसार

यथानियम = नियम के अनुसार

प्रतिदिन = प्रत्येक दिन

प्रतिवर्ष =हर वर्ष

# तत्पुरुष समास

जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद गौण हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे – तुलसीदासकृत = तुलसीदास द्वारा कृत (रचित)

देश के लिए भक्ति = देशभक्ति

राजा का पुत्र = राजपुत्र

शर से आहत = शराहत

राह के लिए खर्च = राहखर्च

तुलसी द्वारा कृत = तुलसीदासकृत

# द्विगु समास

जिस समास का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इससे समूह अथवा समाहार का बोध होता है। जैसे –

नवग्रह = नौ ग्रहों का समूह

दोपहर = दो पहरों का समाहार

त्रिवेणी = तीन वेणियों का समूह

पंचतन्त्र = पांच तंत्रों का समूह

त्रिलोक =तीन लोकों का समाहार

# द्वन्द्व समास

जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर 'और', अथवा, 'या', एवं लगता है, वह द्वंद्व समास कहलाता है। जैसे-

जलवायु = जल और वायु

अपना-पराया = अपना या पराया

पाप-पुण्य = पाप और पुण्य

राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण

अन्न-जल = अन्न और जल

# बहुव्रीहि समास

जिस समास के दोनों पद अप्रधान हों और समस्तपद के अर्थ के अतिरिक्त कोई सांकेतिक अर्थ प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे –

गजानन = गज का आनन है जिसका (गणेश)

त्रिनेत्र =तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)

नीलकंठ =नीला है कंठ जिसका (शिव)

लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)

दशानन = दश हैं आनन जिसके (रावण)

# कर्मधारय समास

जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद व उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे –

चरणकमल = कमल के समान चरण

नीलगगन =नीला है जो गगन

चन्द्रमुख = चन्द्र जैसा मुख

पीताम्बर =पीत है जो अम्बर

महात्मा =महान है जो आत्मा

# धन्यवाद!!